

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 19: ययाति मोक्ष

1 October 2026



अन्ततः प्रत्येक कामना से मुक्त, राजा ययाति अपने पुत्र का यौवन लौटा देते हैं, वन को प्रस्थान करते हैं, और — आत्म-साक्षात्कार से समस्त आसक्ति त्यागकर — परम भगवान् वासुदेव में लीन हो जाते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह उन्नीसवाँ अध्याय राजा ययाति की कथा को पूर्ण करता है। अपने पुत्र के उधार लिए यौवन से एक हजार वर्ष इन्द्रिय-भोग करने के पश्चात्, ययाति अन्ततः अपने प्रयास की व्यर्थता के प्रति जागृत होते हैं। शुकदेव राजा परीक्षित को बकरे एवं बकरी की कथा सुनाते हैं, जिसके द्वारा ययाति देवयानी के प्रति अपने बन्धन को स्वीकार करते हैं; वह कालातीत सत्य कि कामना भोग से कभी शान्त नहीं होती बल्कि घृत से पोषित अग्नि के समान केवल बढ़ती है; और ययाति का अपना मन ब्रह्म पर स्थिर करने का संकल्प। अपने पुत्र का यौवन लौटाकर एवं अपनी वृद्धावस्था वापस लेकर, राजा संसार का त्याग करते हैं, वन को प्रस्थान करते हैं, और परम भगवान् वासुदेव में लीनता प्राप्त करते हैं। देवयानी भी इस संसार की क्षणभंगुरता को समझकर अपनी चेतना भगवान् श्री कृष्ण के चरणों में अर्पित कर देती हैं और इस प्रकार मुक्ति को प्राप्त होती हैं। यह अध्याय हमें सिखाता है कि इच्छाओं की दौड़ कभी समाप्त नहीं होती, और सच्ची शान्ति केवल भगवान् की शरण में ही मिलती है।

अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 19 (एकोनविंश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: राजा ययाति का मोक्ष
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: चन्द्रवंश में राजा ययाति का राज्य; उनके संन्यास का वन
- केन्द्रीय विषय: ययाति का इन्द्रिय-भोग से जागरण, बकरे की कथा, कामना का सत्य, और ययाति एवं देवयानी का मोक्ष
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 19, श्लोक 1-29
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

ययाति अभी भी अतृप्त

शुकदेव ने कथा आगे बढ़ाई। अपनी पत्नी के प्रति आसक्ति की पकड़ में इन्द्रिय-भोग करते हुए, ययाति अन्ततः अपने आध्यात्मिक पतन के प्रति जागृत हुए; और, संसार से विरक्त होकर, उन्होंने देवयानी को एक ऐसे व्यक्ति की कथा सुनाई जिसका आचरण उनके अपने समान था।

श्रीशुक उवाच

स इत्थमाचरन् कामान् स्त्रैणोऽपह्नवमात्मनः ।

बुद्ध्वा प्रियायै निर्विण्णो गाथामेतामगायत ॥ १ ॥

śrī-śuka uvāca sa ittham ācaran kāmān straiṇo 'pahnavam ātmanaḥ buddhvā priyāyai nirviṇṇo gāthām etām agāyata

अर्थ: शुकदेव ने कहा: इस प्रकार इन्द्रियों का भोग करते हुए, किन्तु अपनी पत्नी के दास के रूप में अपने आध्यात्मिक पतन के प्रति जागृत होकर, विरक्त ययाति ने अपनी प्रिया को यह कथा सुनाई। (नवम स्कन्ध, अध्याय 19, श्लोक 1)

बकरे की कथा

ययाति ने कहा, कभी एक बकरा वन में अकेला अपनी वांछित वस्तु की खोज में भटक रहा था, जिसने अपने ही प्रारब्ध से एक कुँए में गिरी हुई एक बकरी को देखा।

बस्त एको वने कश्चिद् विचिन्वन् प्रियमात्मनः ।

ददर्श कूपे पतितां स्वकर्मवशगामजाम् ॥ ३ ॥

basta eko vane kaścid vicinvan priyam ātmanaḥ dadarśa kūpe patitāṁ sva-karma-vaśagām ajām

अर्थ: एक बकरा, वन में अकेला अपनी वांछित वस्तु की खोज में भटकता हुआ, अपने ही प्रारब्ध के वश एक कुएँ में गिरी बकरी को देखता है।
(नवम स्कन्ध, अध्याय 19, श्लोक 3)

बकरे ने अपने सींगों से एक मार्ग खोदकर उसे निकाला; वह उससे प्रेम कर बैठी, और अनेक अन्य बकरियाँ भी उसकी ओर आकर्षित हुई, और वह उनके बीच रमण करता रहा, काम में स्वयं को खोकर। जब पहली बकरी ने उसे किसी अन्य के साथ देखा, वह दुःखी होकर उसे छोड़कर अपने स्वामी, एक ब्राह्मण, के पास लौट गई, जिसने बकरे को दण्डित किया फिर पुनर्स्थापित किया; फिर भी बकरा कभी सन्तुष्ट न हुआ। इस बकरे में, ययाति ने स्वीकार किया, उन्होंने स्वयं को देखा — देवयानी के प्रेम की डोरियों से बँधा, अपने ही सच्चे स्वरूप को पहचानने में असमर्थ।



ययाति द्वारा देवयानी को सुनाई गई कथा में, वन में भटकता एक बकरा एक कुएँ में गिरी बकरी को पाता है और अपने सींगों से उसे खोदकर निकालता है — अपनी ही कामनाओं से बार-बार फँसती आत्मा का एक चित्र (श्लोक 2-11)।

कामना का सत्य

तब ययाति ने वह कालातीत सत्य कहा: पृथ्वी का समस्त अन्न, स्वर्ण, पशु एवं स्त्रियाँ काम से ग्रस्त मनुष्य के मन को तृप्त नहीं कर सकतीं। कामना, उन्होंने कहा, भोग से कभी शान्त नहीं होती; वह केवल और ऊँची भड़कती है, घृत से पोषित अग्नि के समान।

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।

हविषा कृष्णवर्त्मैव भूय एवाभिवर्धते ॥ १४ ॥

na jātu kāmāḥ kāmānām upabhogena śāmyati haviṣā kṛṣṇa-vartmeva bhūya evābhivardhate

अर्थ: कामना अपने विषयों के भोग से कभी सन्तुष्ट नहीं होती; बल्कि, घृत से पोषित अग्नि के समान, वह पुनः और भी अधिक भड़क उठती है।
(नवम स्कन्ध, अध्याय 19, श्लोक 14)

एक हजार वर्ष, उन्होंने कहा, भोग के पीछे बीत गए, फिर भी प्रत्येक भोग ने उनकी तृष्णा को केवल नवीन किया। अतः उन्होंने यह निश्चय किया कि अब वे इस व्यर्थ लालसा से मुख मोड़कर परब्रह्म में अपनी चेतना को लीन करेंगे, और वन के मृगों के बीच स्वच्छन्द विचरण करते हुए द्वन्द्वों एवं अहंकार से सर्वथा मुक्त हो जाएँगे।

तस्मादेतामहं त्यक्त्वा ब्रह्मण्यध्याय मानसम् ।

निर्द्वन्द्वो निरहङ्कारश्चरिष्यामि मृगैः सह ॥ १९ ॥

tasmād etām aham tyaktvā brahmaṇy adhyāya mānasam nirdvandvo nirahaṅkāraś cariṣyāmi mṛgaiḥ saha

अर्थ: अतः इस तृष्णा को त्यागकर एवं अपना मन ब्रह्म पर स्थिर करके, द्वन्द्वों एवं अहंकार से मुक्त, मैं मृगों के साथ विचरण करूँगा। (नवम स्कन्ध, अध्याय 19, श्लोक 19)



अन्ततः जागृत होकर, राजा ययाति अपनी पत्नी देवयानी को वह कालातीत सत्य सिखाते हैं — कि कामना, भोग से पोषित, घृत से पोषित अग्नि के समान केवल ऊँची भड़कती है, और शान्ति केवल मन को ब्रह्म की ओर मोड़ने से मिलती है (श्लोक 12-20)।

ययाति अपने पुत्र का यौवन लौटाते हैं

ऐसा कहकर, ययाति ने पूरु का यौवन उसे लौटा दिया और अपनी वृद्धावस्था वापस ले ली, अब भोग की प्रत्येक कामना उनसे सदा के लिए जा चुकी थी। उन्होंने द्रुह्यु, यदु, तुर्वसु एवं अनु को विभिन्न दिशाओं का शासक नियुक्त किया, योग्य पूरु को सम्पूर्ण पृथ्वी का सम्राट् स्थापित किया, और वन को प्रस्थान किया।



समस्त कामना से मुक्त, ययाति पूरु का यौवन लौटा देते हैं, अपनी वृद्धावस्था वापस लेते हैं, और वन को प्रस्थान करने से पूर्व योग्य पूरु को सम्पूर्ण पृथ्वी का सम्राट् स्थापित करते हैं (श्लोक 21-23)।

एक ही क्षण में उन्होंने वे इन्द्रिय-सुख त्याग दिए जिन्हें उन्होंने इतने वर्षों तक पीछा किया था, जैसे एक पक्षी, पंख आने पर, अपना घोंसला छोड़ देता है।

ययाति परम को प्राप्त करते हैं

वन में, समस्त आसक्ति त्यागकर एवं आत्म-साक्षात्कार से सूक्ष्म शरीर से पृथक् होकर, यशस्वी ययाति ने परम, निर्मल ब्रह्म — वासुदेव नाम से ज्ञात — में लीनता प्राप्त की, वह अवस्था जो केवल भगवान् के प्रति भक्ति से प्राप्य है।

स तत्र निर्मुक्तसमस्तसङ्ग
आत्मानुभूत्या विधुतत्रिलिङ्गः ।
परेऽमले ब्रह्मणि वासुदेवे
लेभे गतिं भागवतीं प्रतीतः ॥ २५ ॥

sa tatra nirmukta-samasta-saṅga ātmānubhūtyā vidhuta-trilingaḥ pare 'male brahmaṇi vāsudeve lebhe gatim bhāgavatīm pratītaḥ

अर्थ: वहाँ, समस्त आसक्ति से मुक्त एवं, आत्म-साक्षात्कार से, सूक्ष्म शरीर से रहित होकर, ययाति ने भक्ति की गति प्राप्त की — परम, निर्मल ब्रह्म वासुदेव में लीनता। (नवम स्कन्ध, अध्याय 19, श्लोक 25)

देवयानी का मोक्ष

कथा सुनकर, देवयानी ने पहले उसे अपने प्रति एक ताना समझा, फिर एक प्रेममय परिहास; किन्तु उस पर विचार करके, उसने जाना कि प्रियजनों का समागम मार्ग में एक प्याऊ पर यात्रियों के मिलन के समान है — भगवान् की इच्छा से एकत्र किए गए एवं शीघ्र बिछुड़ने वाले। समस्त आसक्ति को एक स्वप्न के समान त्यागकर एवं अपना मन श्री कृष्ण पर स्थिर करके, उसने भी अपना सूक्ष्म शरीर त्याग दिया और मोक्ष प्राप्त किया।

सा सन्निवासं सुहृदां प्रपायामिव गच्छताम् ।

विज्ञायेश्वरतन्त्राणां मायाविरचितं प्रभोः ॥ २७ ॥

सर्वत्र सङ्गमुत्सृज्य स्वप्नौपम्येन भार्गवी ।

कृष्णो मनः समावेश्य व्यधुनोल्लिङ्गमात्मनः ॥ २८ ॥

*sā sannivāsaṁ suhṛdāṁ prapāyām iva gacchatām vijñāyeśvara-tantrāṇāṁ māyā-viracitaṁ
prabhoḥ sarvatra saṅgam utsṛjya svapnaupamyena bhārgavī kṛṣṇe manaḥ samāveśya vyadhuno
līṅgam ātmanaḥ*

अर्थ: यह जानकर कि प्रियजनों का समागम, सभी भगवान् के अधीन, एक प्याऊ पर यात्रियों के मिलन के समान है, भगवान् की माया से रचित, देवयानी ने समस्त आसक्ति को एक स्वप्न के समान त्याग दिया, अपना मन श्री कृष्ण पर स्थिर किया, और अपना सूक्ष्म शरीर त्याग दिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 19, श्लोक 27-28)



समस्त सांसारिक बन्धनों की स्वप्न-सदृश, क्षणभंगुर प्रकृति के प्रति जागृत होकर, देवयानी प्रत्येक आसक्ति का त्याग करती हैं, अपना मन पूर्णतः श्री कृष्ण पर स्थिर करती हैं, और अपने पति के समान मोक्ष प्राप्त करती हैं (श्लोक 26-28)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. कामना भोग से समाप्त नहीं हो सकती। ययाति के अपने हजार वर्ष के भोग सिद्ध करते हैं कि कामना को खिलाना उसे केवल बलवान् बनाता है, जैसे घृत अग्नि को। शान्ति का मार्ग अधिक नहीं, बल्कि पर्याप्त है (श्लोक 13-14)।
2. हम सब कभी-न-कभी कथा के बकरे हैं। ययाति सदा पीछा करते एवं कभी सन्तुष्ट न होते बकरे में स्वयं को देखते हैं — एक दर्पण जो अध्याय भोग के पीछे उलझी प्रत्येक आत्मा के समक्ष रखता है (श्लोक 2-12)।
3. संन्यास एक आनन्दमय मुक्ति है, हानि नहीं। ययाति अपने भोग एक ही क्षण में त्याग देते हैं, “जैसे पक्षी पंख आने पर घोंसला छोड़ देता है।” सच्चा संन्यास अन्ततः मुक्त हुए व्यक्ति की हलकापन है (श्लोक 24)।
4. मोक्ष भक्ति से आता है। ययाति वासुदेव को केवल संन्यास से नहीं बल्कि भक्ति में निहित आत्म-साक्षात्कार से प्राप्त करते हैं; लक्ष्य, अध्याय कहता है, केवल भगवान् के प्रति भक्ति से प्राप्य है (श्लोक 25)।
5. हमारे सब बन्धन भगवान् का क्षणिक समागम हैं। देवयानी की अन्तर्दृष्टि — कि प्रियजन एक प्याऊ पर यात्रियों के समान मिलते एवं शीघ्र बिछुड़ते हैं — उसे मुक्त करती है कि वह अपना मन कृष्ण पर स्थिर करे। अपने सम्बन्धों को हलके भाव से, भगवान् के उपहार के रूप में धारण करना, स्वतन्त्रता का आरम्भ है (श्लोक 27-28)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

समस्त शास्त्रों में विरले ही अंश हमारे अपने युग से इतनी सीधे बात करते हैं जितनी ययाति की स्वीकारोक्ति। यहाँ एक मनुष्य है जिसके पास सब कुछ था — एक राज्य, भक्त पत्नियाँ, और उनका एक हजार वर्ष भोग करने के लिए उधार लिया यौवन भी — और जो, इन सबके अन्त में, यह खोजता है कि वह ठीक उतना ही भूखा है जितना आरम्भ में था। घृत से पोषित अग्नि के समान ऊँची भड़कती कामना पर उनके शब्द

समस्त भागवत में सर्वाधिक उद्धृत हैं, क्योंकि वे एक ऐसे सत्य का नाम लेते हैं जिसे हम सब आधा जानते एवं आधा भूल जाते हैं: कि अगला सुख हमें पिछले से अधिक सन्तुष्ट नहीं करेगा। किन्तु ययाति की कथा निराशा में समाप्त नहीं होती; वह स्वतन्त्रता में समाप्त होती है। जिस क्षण वे अग्नि को खिलाना बन्द करते हैं, वह बुझ जाती है। वे उस यौवन को लौटा देते हैं जिससे वे चिपके थे, अपना मुकुट रख देते हैं, और वन में उतनी ही हलके भाव से प्रवेश करते हैं जितनी हलके भाव से एक पंख-युक्त पक्षी अपना घोंसला छोड़ता है — और वहाँ, भक्ति में निहित आत्म-साक्षात्कार से, वे भगवान् में लीन हो जाते हैं। और उनकी पत्नी देवयानी, वही कठोर सत्य सुनकर, भी जागृत होती हैं, अपने समस्त प्रियतम बन्धनों को मार्ग पर यात्रियों के एक क्षणिक मिलन के रूप में देखती हैं, और अपना हृदय कृष्ण पर स्थिर करती हैं। भागवत हमें उनका उदाहरण एक धिक्कार के रूप में नहीं बल्कि एक द्वार के रूप में देता है: कि वह अशान्ति जिसे हम अधिक पाकर कभी सन्तुष्ट नहीं कर सकते, एक ही स्पष्ट क्षण में, भगवान् की ओर मुड़कर विलीन की जा सकती है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, एक ऐसी लालसा पर एक ईमानदार दृष्टि डालें जो कभी सन्तुष्ट होती न प्रतीत हो — वस्तुओं, प्रशंसा, आराम या सुख की — और, ययाति के समान, उसे स्वयं को सच्चाई से बताएँ: कि उसे खिलाने ने उसे केवल बलवान् बनाया है। फिर, इस एक दिन के लिए, “पर्याप्त” का अभ्यास करें: जानबूझकर एक ऐसे भोग को अस्वीकार करें जिसकी ओर आप सामान्यतः बढ़ते, और उससे बची छोटी भूख को भगवान् को अर्पित करें, मृदुता से दोहराते हुए, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” देवयानी की अन्तर्दृष्टि स्मरण करें कि हमारे सब प्रियजन मार्ग पर क्षण भर मिले यात्री हैं, और अपने सम्बन्धों एवं वस्तुओं को थोड़ा और हलके भाव से धारण करें, भगवान् के उपहार के रूप में जो शीघ्र लौटाए जाने हैं। कामना से भगवान् की ओर मुड़ने का यह एक दिन आपका अभ्यास बने, और उस स्वतन्त्रता का, एक क्षण के लिए भी, स्वाद लें जो ययाति ने पाई।

उपसंहार

नवम स्कन्ध का उन्नीसवाँ अध्याय राजा ययाति की कथा को उसके देदीप्यमान अन्त तक ले जाता है। एक हजार वर्ष के इन्द्रिय-भोग के पश्चात्, जिसने उन्हें पहले जितना ही अतृप्त छोड़ा, ययाति बकरे की कथा से जागृत होते हैं, वह कालातीत सत्य कहते हैं कि कामना कभी शान्त नहीं होती बल्कि भोग से केवल पोषित होती है, और अपना मन ब्रह्म पर स्थिर करने का संकल्प करते हैं। अपने पुत्र का यौवन लौटाकर एवं अपना मुकुट रखकर, वे वन को प्रस्थान करते हैं और, भक्ति में निहित आत्म-साक्षात्कार से, परम भगवान् वासुदेव में लीनता प्राप्त करते हैं; और देवयानी, समस्त सांसारिक बन्धनों की स्वप्न-सदृश प्रकृति के प्रति जागृत होकर, अपना मन श्री कृष्ण पर स्थिर करती हैं और उनके साथ मोक्ष प्राप्त करती हैं। अध्याय हमें भागवत की सबसे स्पष्ट एवं सबसे करुणामय शिक्षाओं में से एक के साथ छोड़ता है — कि वह शान्ति जिसे हम कामना के विषयों में अनवरत खोजते हैं, अन्ततः एवं केवल, भगवान् के प्रति समर्पण में पाई जाती है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, एकोनविंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-19-king-yayati-achieves-liberation-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

